नायकक चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत खंडकाव्यक नायक छथि गाण्डीवधारी अर्जुनपुत्र, श्रीकृष्णक भागीन, उत्तराक पति, महाभारतक अन्यतम युवा योद्धा अभिमन्यु जे सोलह वर्ष मात्रक राजकुमार छथि। ओ परम तेजस्वी, दृढ़निश्चयी, आत्मविश्वासी, अदम्य साहसी, धीर एवं वीर छथि। महाभारतक तेरहम दिन अपन प्रतिदिनक पराजयक कारण दुर्योधन आचार्य द्रोणक भर्त्सना करय लगलाह। ओ कहय लगलथिन जे अद्याबधिक युद्धमे सर्वत्र पाण्डव पक्षक विजय भऽ रहल अछि। ओ भर्त्सना पर खिसिया कऽ विकट एवं दुर्भेद्य चक्रव्यूहक रचना कयल। कौरवक एहि योजनासँ पाण्डव लोकनि अनभिज्ञ छलाह। तेँ ओहि दिन अर्जुन आन ठाम युद्धरत छलाह। एहि विषयमे जानकारी भेला पर पाण्डव लोकनि हतप्रभ भऽ गेलाह। के कौरवक एहि बातक उत्तर देत से खोज भऽ रहल छल। कविक शब्दें—

"थिर युधिष्ठिर छथि न, चक्र-व्यूह भेदन दुष्करे।
अर्जुनहु छथि दूर, के दय सकय शत्रुक उत्तरे॥
मन मलान महान जत जे वीर पांडव-पक्षधर।
कुरूदलक उत्साह ध्वनि सुनि मन्द सबहुक कण्ठ स्वर।"[1]

तकर कारण छल जे अर्जुनक अतिरिक्त एहि चारू भाइकेँ चक्रव्यूह भेदनक ज्ञान नहि छलनि। अभिमन्युकेँ एकर अपूर्ण ज्ञान छलनि। अर्थात् ओ चक्रव्यूह केर सातमे सँ छबे टा द्वारकेँ तोड़बाक ब्योंत जनैत छलाह। तइयो अपन आत्मविश्वासक परिचय दैत बाजि उठलाह—

"उठि हठहि अभिमन्यु उद्दीपित कहल, 'चिन्ता न हो।
भेदि चक्रव्यूह प्रविशब, तात मन शंका न हो॥"[2]

आ' चक्रव्यूह भेदनक नेतृत्व अपना ऊपर लऽ लेलाह—

"चक्र-व्यूहक भेदनक नेतृत्व अभिमन्युक ऊपर ।"[3]

तखन युद्ध करबाक लेल प्रस्तुत भ' गेलाह । अभिमन्युक उत्साह देखि उत्तरा सेहो हुनका तिलक लगाय विदा देल । कविक शब्दें—

"वीरताक प्रतीक प्रियतम, प्रियतमा वीरांगना ।
विदा कयलनि तिलक केसरिया लगाय रणांगना ॥
रोष रिपु प्रति उर प्रेम उद्वेलित कलित ।
पतिक छल, पत्नीक मन वीरत्व-करूणा संकलित ॥"[4]

द्रोणाचार्यक चक्रव्यूह दुर्ग द्वार पर कर्ण, कृपाचार्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा आदि महारथी ठाढ़ छलाह जे केओ प्रवेश नहि करय । तावत अभिमन्यु अपना पक्षक संग चक्रव्यूह भेदन करबा हेतु पहुँचि गेलाह । अभिमन्युक जयजयकार होबय लागल—

"ध्वनित सहसा शंख, दश दिश मुखर स्वर अभिमन्यु जय ।"[5]

अभिमन्यु शत्रु पर प्रहार करैत चक्रव्यूह भेदन करबा हेतु प्रवेश कऽ गेलाह से कविक शब्दें—

"जलद-पटलक बीच विद्युत चमकि चौंकाबय जेना ।
कुरूक व्यूहक बीच प्रविशल युवा सेनानी तेना ॥
वाण वर्षण, खड्ग कर्षण, गदा शक्तिक घूर्णना ।
अस्त्र-शस्त्रक योजना, कय देल व्यूहक भंजना ॥"[6]

अर्थात् जेना मेघमे सहसा तीव्र गतिसँ बिजली चमकि उठैछ ताहिसँ भयभीत भऽ लोक चौंकि उठैत अछि तहिना ई (अभिमन्यु) सभकें चौंकाबैत (बिजलीका जकाँ) चक्रव्यूहमे प्रवेश सोलह वर्षीय युवा (अभिमन्यु) कऽ गेलाह । अपन अस्त्र-शस्त्रकें चमकबैत, चक्रव्यूहकें तोड़य लगलाह ।

ओ एहि चक्रव्यूहमे ओहिना निर्भय निशंक भेल विचरण करय लगलाह जेना—

"सिंह-शावक जेना वन निर्भय घुमय घन गर्जना ।
मृग शृगाल वराह गज जत जन्तु, करइत तर्जना ॥
कय सहज प्रवेश एकाकी अभय अभिमन्य पुनि ।
तूल तुल शत्रुक अतुल सेना तेना से देल धुनि ॥"[7]

पांडव पाँचो भाइक जे विशिष्ट रूप-गुण इत्यादि छल तकर मिलित रूप अभिमन्यु छलाह । कविक शब्दें—

"धर्ममे जे धर्मराजे, बलहु भीम भयानके ।
धनुर्धर अर्जुने सहजहिँ, पुत्र आत्मा आनके ?
नकुलहुक अनुरूप रूपें, शील सहदेवक कलित ।
एक तनु जनु पंच पांडव प्राण अभिमन्युहि मिलित ॥"[8]

एहन जे अभिमन्यु से कौरवक सेनाकेँ हताहत करय लगलाह । द्वन्द्व युद्धमे एक-एक कऽ सबकेँ हराबय लगलाह । जेना एकेटा सूर्य नक्षत्र-समूहक बीच उदित होइतहिं अंधकारकेँ विनाश कऽ दैछ, अरुण रूपी सारथिक संग लऽ तहिना ई अभिमन्यु ओहि सूर्यक समान एहि अन्धकार रूपी शत्रुक लेल छलाह । कविक शब्देँ—

"द्वन्द्वयुद्धहु एक-एक हराय, सप्त महारथी ।
अतिरथी अभिमन्यु रण विच संग एकहि सारथी ।।
नख-निकरक बीच एकहु सूर दूरहु उदित भय ।
अंधकार विनाश करइछ अरुण सारथि संग लय ।।"[9]

जे अभिमन्यु द्वन्द्व युद्धमे एक-एक कऽ सभकेँ हरा चुकल छलाह, से सभ समवेत रूप सँ एकाकी अभिमन्यु पर प्रहार करय लगलाह । कविक शब्देँ—

"अस्त्र-शस्त्र चलाय कयल निरस्त्र, अन्यायक विचार ।
एक अभिमन्युक उपर अनेक योद्धा एकधा ।।"[10]

फलतः हिनक सारथी हत भऽ गेल, धनुष टूटि गेलनि, ने हाथमे कृपाणो रहि गेलनि । एहन अभिमन्युक स्थिति भऽ गेलनि मुदा सप्त महारथी निहत्था पर प्रहार करैत रहलाह । अन्तमे विपक्षीक (धर्मयुद्धक विरुद्ध) प्रहार सँ अभिमन्युक मृत्यु भऽ गेलनि । कविक शब्देँ—

"सारथी हत, विरथ, टूटल धनु, न करहु कृपाण धरि ।
करय लागल निरस्त्रहि पर अस्त्र-शस्त्र निशान धरि ।।
विरथ छल अभिमन्यु एकल, ओम्हर सप्त महारथी ।
एक संग प्रहार कय संहार कयलक उत्पथी ।।"[11]

युवा अभिमन्युक बध भेने पाण्डव दलमे शोक व्याप्त भऽ गेल मुदा कौरव सभ हर्ष प्रफुल्लित भऽ गेलाह ।

अभिमन्युक बधक समाचार सुनिते उत्तराक स्थितिक चित्रण करैत कवि लिखैत छथि—

"किन्तु जनि, सिंदूर सीमंतक स्यमंतक मणि लुटल ।
उत्तरा निश्चेतना छथि, छिन्न तरुक लता लुटल ।।
श्वास चलइछ आश तेँ जीवन बूझि पड़ अनुमिता ।
विधि चिकित्सक बूझि व्यथा कयलन्हि व्यवस्था तद्रचिता ।।"[12]

एहन जे एहि खंडकाव्यक नायक 'अभिमन्यु' छथि जनिक चरित्रकेँ स्मरण करिते सहसा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तक 'जयद्रथवधक निम्न पाँति मोन परि जाइछ—

"वह बाल होकर भी मृदुल, अति प्रौढ़ था निज काम में,
बातें अलौकिक थीं सभी दिव्य शोभाधाम में ।
क्या रूप में क्या शक्ति में, क्या बुद्धि में क्या ज्ञान में,
गुणवान वैसा अन्य जन आता नहीं है ध्यान में ।।"

Prof. (Dr) Birendra Jha, Dept. of Maithili, PU